डॉ. के. पी. शहा
एम.ए.,पीएच.डी.
रिडर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,
कोल्हापुर
तथा
स्नातकोत्तर अध्यापक,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

प्रमाणपत्र

मै प्रमाणित करता हूँ कि श्री. राजेंद्र गणपत राणे ने ''डॉ. शंकर शेष के नाटकों में चित्रित समस्याएँ '' ('घरौंदा', 'एक और द्रोणाचार्य' तथा 'पोस्टर' नाटक के विशेष संदर्भ में) यह लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है। इसमें शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य लघु-शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध छात्र के कार्य से मै पूर्णतः संतुष्ट हूँ।

स्थान : कोल्हापुर
तिथि : 29 DEC 2000

शोध निर्देशक

(डॉ. के. पी. शहा)

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम.ए.,पीएच.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

संस्तुति पत्र

मै संस्तुति करता हूँ कि श्री. राजेंद्र गणपत राणे द्वारा लिखित "डॉ. शंकर शेष के नाटकों में चित्रित समस्याएँ" ('घरौंदा', 'एक और द्रोणाचार्य' तथा 'पोस्टर' नाटक के विशेष संदर्भ में) यह लघु-शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर
तिथि : 29 DEC 2000

29.12.2000
(डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण)
अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४

प्रख्यापन

''डॉ. शंकर शेष के नाटकों में चित्रित समस्याएँ '' ('घरौंदा', 'एक और द्रोणाचार्य' तथा 'पोस्टर' नाटक के विशेष संदर्भ में) यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर
तिथि : 29 DEC 2009

(राजेंद्र गणपत राणे)

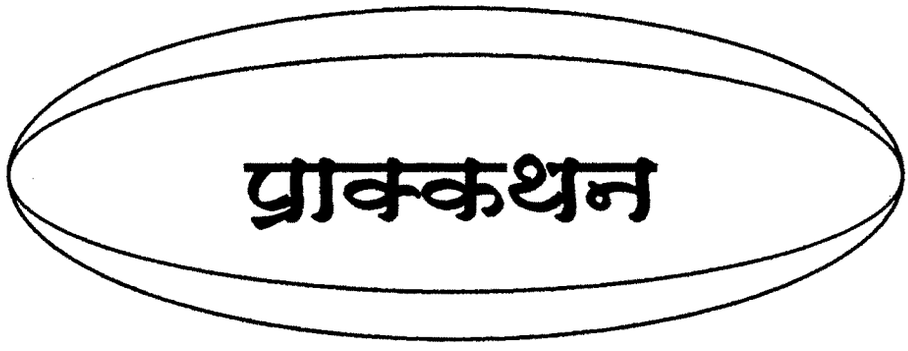

प्राक्कथन

प्राक्कथन

जनवरी, १९९७, मुंबई में अंतर्विश्वविद्यालयीन भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। उस में शिवाजी विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने का मौका मुझे मिला। इस प्रतियोगिता में मुझे प्रथम स्थान भी प्राप्त हुआ। उस दिन मुंबई में डॉ. शंकर शेष के 'पोस्टर' नाटक का मंचन होनेवाला था। मेरी सफ़लता का की खुशियाँ मनाने हिंदी-भाषी मित्र मुझे वहाँ ले गए। किंतु मंच पर दु:ख, दर्द, आक्रोश और संघर्ष का यथार्थ चित्र देखकर तो हम सभी स्तंभित हो गए। उस ने हमे अंतर्मुखकर दिया। कई दिनों तक मै उसके प्रभाव से बाहर नहीं निकल सका।

मैने उस घटना से प्रभावित होकर डॉ. शेष जी के नाटक एक के बाद एक पढ़ने शुरु कर दिए। मुझे महसूस हुआ कि 'समस्या' और संघर्ष उनके नाटकोंका केंद्रबिंदू है। इन दो बिंदूओं से मेरी बचपन से गहरी पहचान रही है। दसवीं कक्षा के बाद 'अर्थार्जन' के लिए श्रम और पढ़ाई दोनों मेरे जीवन में समानांतर चली है। साथ ही 'समाज-सेवा' के क्षेत्र में विविध समस्याओं से नजदिक से देखने का मौका मिला था। दूसरी तरफ बचपन से'जिला स्तर'से'राष्ट्रीय स्तर'तक दो सौ से जादा भाषण प्रतियोगिताओं में पारितोषिक प्राप्त किए थें। उन जगहों पर जादातर विषय समस्याओं से संबंधित रहते थे। इन सभी जगहों पर मुझे प्राप्त अनुभव और शंकर शेषके 'नाटक' इनमें मुझे साम्य दिखाई देता था। बढ़ति रुचि के कारण डॉ. शेष का साहित्य मेरे लिए खोज की दुनियाँ बन चुका।

एम. फिल. में अनुसंधान कार्य के लिए मेरे सौभाग्य से डॉ. के. पी. शहा जी जैसे विद्वान शोध-निर्देशक मिले। उन्होंने डॉ. शेष के नाटकों का गहन अध्ययन किया है। अत: उनके साथ चर्चा करने के उपरान्त उन्होने 'डॉ. शंकर शेष के नाटकों में चित्रित समस्याएँ' ('घरौंदा', 'एक और द्रोणाचार्य', तथा 'पोस्टर' नाटक के विशेष संदर्भ में) इस विषय पर अनुसंधान कार्य करनेकी अनुमति दी। श्रध्देय गुरुवर्य डॉ. के. पी. शहा जी के सहयोग प्रेरणा तथा प्रोत्साहन के कारण ही मेरा विषयचयन, अनुसंधान कार्य एवं लघु शोध प्रबंध इन पृष्ठोंपर साकार हो सका।

अनुसंधान के आरंभ में अनुसंधानकर्ता के सामने निम्नांकित प्रश्न खड़े हुए थे -

१) डॉ. शंकर शेष की कृतियों पर उनके व्यक्तित्व का कैसा प्रभाव रहा है ?

२) उनके आलोच्य नाटकों में कितने प्रकारों की समस्या चित्रित हुई है ?

३) समस्या चित्रण में वे कहां तक सफ़ल हुए हैं ?

४) क्या हरएक प्रकार की समस्याएँ आलोच्य नाटकों में चित्रित है? उसका स्वरुप किस प्रकार है?

५) आलोच्य नाटकों में 'समस्या चित्रण' की विशेषताएँ कौनसी है?

६) नाटककार का 'समस्या चित्रण' के पीछे क्या उद्देश्य है ? वर्तमान युग में आलोच्य नाटक कहाँ तक प्रेरणा दे सकते है ?

'घरौंदा', 'एक और द्रोणाचार्य' और 'पोस्टर' के अध्ययन के उपरान्त अनुसंधानकर्ता को उपरोक्त प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए हैं। उन्हें उपसंहार में दर्ज किया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित कर अपने विषयों का विवेचन किया है।

प्रथम अध्याय - ''डॉ. शंकर शेष : व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

प्रस्तुत अध्याय में अनुसंधान कर्ता ने डॉ. शंकर शेष जी के जीवन परिचय के अंतगर्त उनकी पारिवारिक पृष्टभूमि, जन्म, शिक्षा, विवाह, अर्थोपार्जन तथा 'साहित्य सृजन आरंभ' के साथ उनके व्यक्तित्व निखारनेवाले विविध पहलूओंपर प्रकाश डाला है। कृतित्व के अंतर्गत उनकी साहित्य संपदा का परिचय दिया है। साथ ही उनके साहित्य सृजन के लिए उनके निजी जीवन की कौनकौनसी घटनाएँ प्रेरणादायी बनी है। इसका विवरण प्रस्तुत किया है। इन सभी बातों का लेखाजोखा निष्कर्ष के रुप में दिया है।

•

द्वितीय अध्याय - ''डॉ. शंकर शेष के नाटकोंका सामान्य परिचय''

प्रस्तुत अध्याय में अत्यंत संक्षिप्तता से उनके सभी नाटकों की कथावस्तु का मूल्यांकन किया है। हर साहित्यकृति की विशेषता, पीछे के उददेश्य, व्याप्त समस्याए आदि बातों का विवरण प्रस्तुत

किया है। अंत में उनके सभी नाटककार के नाटकों में दिखानेवाली प्रमुख प्रवृत्तियों, विशेषताओं को लेकर प्राप्त निष्कर्षो को दर्ज किया है।

तृतीय अध्याय - ''समस्याएँ स्वरुप, वर्गीकरण एवम विशेषताएँ''

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत समस्या का स्वरुप के बारे में चर्चा की है। समस्याओं का वर्गीकरण करते हुए। सामाजिक और साहित्यिक संदर्भों को लेकर 'समस्या चित्रण' में सभी विशेषताओं का विश्लेषण किया है। निष्कर्ष में इनका सार रुप दिया है।

चतुर्थ अध्याय - ''डॉ. शंकर शेष के आलोच्यनाटकों में चित्रित समस्याएँ''

अ) घरौंदा ब) एक और द्रोणाचार्य क) पोस्टर

प्रस्तुत अध्याय में अनुसंधाता ने आलोच्य नाटकों में पाई जानेवाली पारिवारिक समस्या, आर्थिक समस्या, नारी समस्या, शिक्षा: समस्या, मूल्य विघटन समस्या, वर्ग संघर्ष की समस्या, धार्मिक समस्या, व्यवस्था का दमनचक्र की समस्या, महत्वकांक्षा की क्रूरता से उत्पन्न समस्या और मनोवैज्ञानिक समस्याओं को प्रस्तुत किया है। निष्कर्ष में इनका सार रुप संक्षेप में विश्लेषित किया है।

पंचम अध्याय - ''डॉ. शंकर शेष के आलोच्य नाटकों में चित्रित समस्याओं का तौलनिक अध्ययन''

प्रस्तुत अध्याय में आलोच्य नाटकों में संघर्ष कितने धरातल पर उभरे है, एकही समस्या का सभी नाटकों में स्वरुप किस प्रकार का है, दो नाटकों में चित्रित समस्या के बीच के संबंध इन सभी बातों का तौलनिक अध्ययन किया है। नाटक में समस्या का 'उद्‌भव', 'विकास,' 'चरमसीमा' और 'उपाय' इन सभी बातों का आलोच्य नाटक के ही आधार पर विश्लेषित किया है। अंत में सार रुप निष्कर्ष दिया है।

उपसंहार

अंत में उपसंहार के रुप में इस लघु-शोध प्रबंध को निचोड़ दिया है। इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष दिए है।

ऋणनिर्देश

मेरी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य मानता हूँ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध की संपन्नता श्रदधेय, गुरुवर्य डॉ. के. पी. शहा जी के प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं प्रेरक निर्देशन का फल है। आपकी प्रेरणा और आशिर्वाद का मैं सदैव ऋणी रहुंगा।

पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष श्रदधेय, गुरुवर्य डॉ. वसंत मोरे जी एवं गुरुवर्य डॉ. पांडूरंग पाटील जी, हिंदी विभागाध्यक्षाआदरणीय, गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी , डॉ. सुनिलकुमार लवटे जी इन सभी ने अपने कामों से वक्त निकालकर मुझे इस शोध कार्य के लिए प्रोत्साहीत किया है। उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य मानता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को पूरा करने में जिनका स्नेह एवं अशिश सदैव मेरे साथ रहा और जिन्होंने मुझे आजतक संघर्ष के पलों से जुझना सिखाया वे मेरे परमपूज्य माता-पिता, मेरे भाई श्रीनिवास इन सब के द्वारा मिली प्रेरणा के प्रति मैं जीवनभर कृतज्ञ रहूँगा।

दसवीं कक्षा के बाद मुझे जिन्होंने प्रमुखता से अर्थार्जन करने में सहयोग देकर मुझे अपने पैरोंपर खड़ा किया। क्रमशः मल्लिकार्जुन इंजिनिअरींग वर्क्स, एस. पी. एस. इंजिनिअर्स, कुरकुटे ब्रदर्स प्रा. लि. और शक्ति सबमर्सिबल पंप प्रा. लि. से जुड़े सभी लोगों का सहयोग ही मेरी आजतक की पढ़ाई के लिए सहायक हुआ है। उसके लिए मै सदा कृतज्ञ रहूँगा।

मेरे परम स्नेही विश्वास पाटील, अशोक बाचूलकर, प्रा. कोतवाल, प्रा. कदम, प्रा. सुनिल धनसाडे किशोर पाटील, साताप्पा चव्हाण आदि हितौषियों का आभारी हूँ। साथ ही शिवाजी विश्वविद्यालय, महाविर

महाविद्यालय, राजाराम महाविद्यालय, दत्ताजीराव कदम महाविद्यालय में स्थित ग्रंथालयों के कर्मचारियों के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ।

जेष्ट समाज-सेवी आदरणीय अण्णा हजारे जी, धनंजय खोंद्रे, संजय रासम, पंढरीनाथ टाकवडे इन्होंने मुझे नई दृष्टि दी। उनके प्रति मै कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध का सुंदर रुप में टंकण करनेवाले सॅम कॉम्प्युटर्स, प्रोप्रा. आयुब मुल्ला (सुतार), इचलकरंजी का मै आभारी हूँ।

अंत में उन ज्ञात, अज्ञात व्यक्ति जिनका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष सहयोग मेरे लिए अमूल्य सिद्ध हुआ उन सब के प्रति मैं हदय से आभार प्रकट करता हूँ और विनम्रता के साथ विद्वानों के सम्मुख इस लघु शोध प्रबंध को परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध छात्र

स्थान - कोल्हापुर
तिथि - 29-12-2000

राजेंद्र राणे